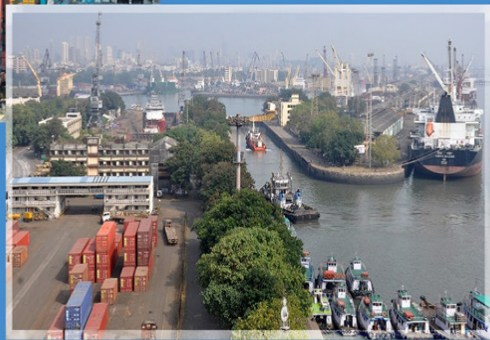

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट

अंक पहला (नया संस्करण)

सितंबर 2015

अपना पोर्ट

संपादक मंडल

श्री. राजेंद्र पैबीर	सचिव
श्री. गिरिराज सिंह राठोड	उप सचिव
श्रीमती प्राची देसाई	सतर्कता अधिकारी
श्री. ला.रा. राम	हिंदी अधिकारी

संपादकीय सहायता : श्री. नामदेव घोडके

अभिकल्प एवं ग्राफिक : श्री. राजन लाड

अध्यक्षजी की कलम से

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट की गृहपत्रिका 'अपना पोर्ट ' का प्रथम ई अंक प्रकाशित करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है. इस पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों और कर्मचारियों में छिपी हुई प्रतिभा को उजागर करने तथा पोर्ट ट्रस्ट की विभिन्न गतिविधियों को सामान्य जन तक पहुंचाने में सहायता प्राप्त होगी.

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट माल सम्हलाई के क्षेत्र में अग्रगण्य है. मुंपोट्र ने वर्ष 2014–2015 में नौभार सम्हलाई में 61.61 दशलक्ष टन का कीर्तिमान स्थापित किया है. हालही में अपतट कन्टेनर टर्मिनल का पर्यायी इस्तेमाल की भी मुंपोट्र ने शुरुवात की है. जिससे यह ऍटोमोबाईल्स निर्माताओं को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान कर सकेगा और दुनियाभर के अलग – अलग देशों में उनके उत्पादों को निर्यात किया जा सकेगा. इसके चलते मुंबई पोर्ट ट्रस्ट द्वारा 1,70,000 से अधिक कारों तथा ऍटोमोबाईल्स की सम्हलाई का एक नया कीर्तिमान अपेक्षित है.

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने शहर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सीमेंट टर्मिनल के निर्माण हेतु अपनी 2.5 हेक्टेअर्स जमीन अल्ट्राटेक सीमेंट लिमिटेड को पट्टेपर देने का निर्णय लिया है. इससे समुद्र मार्ग से सीमेंट की आवाजाही हो सकेगी और मुंबई को वायु प्रदूषण से मुक्ति मिलेगी.

मुंपोट्र ने कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए कॉटनग्रीन स्थित अपनी तीन ईमारतों को नाममात्र के शुल्क पर टाटा स्मारक अस्पताल को देने का निर्णय लिया है. इससे टाटा स्मारक अस्पताल में आनेवाले कॅन्सर रोगियों और उनके रिश्तेदारों को रहने के लिए सुविधा होगी.

मुंपोट्र ने मुंबई शहर के ऐतिहासिक स्थल ससून द्वार का पुनःनिर्माण कर उसके मूल रुप की शान वापस दिलायी. और माननीय केंद्रीय नौवहन मंत्री के करकमलों इसे शहर को समर्पित किया.

आज स्पर्धा के युग में अनेक प्रकार की उपलब्धियां हासिल करते हुए हम प्रगतिपथपर है. यह सब अधिकारियों, कर्मचारियों और स्टॅक होल्डरों के परिश्रम का ही परिणाम है. आप सभी को मेंरी हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए मैं "अपना पोर्ट" के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ.

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने शहर का ऐतिहासिक स्थल, ससुन गोदी द्वार का जीर्णोद्धार किया.

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट गत 141 वर्षों की लंबी अवधि से प्रतीकात्मक रुप से मुंबई शहर के साथ जुडा हुआ है. आज के दौर में मुंबई शहर के दैदिप्यमान अतीत को बनाये रखने के अपने प्रयास में मुं.पो.ट्र. ने समुद्र मार्ग से व्यापार का पहला प्रवेशद्वार बने ससुन गोदी के ऐतिहासिक महत्व को जतन करने के उद्देश्य से उसको मजबूत करने का कार्य हाथ में लिया. सर डेविड ससुन की कंपनी द्वारा एक ठोस चट्टान की कटाई कर यह गोदी बनायी गयी और उनका नाम दिया गया. दक्षिण मुंबई में कुलाबा स्थित इस पहली सजल गोदी ससुन गोदी का निर्माण वर्ष 1870 के आसपास वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए हुआ. नवंबर 1869 में सुएज नहर को यातायात हेतु खोल देने के फलस्वरुप यूरोप तथा भारत के बीच एक नया समुद्री व्यापार मार्ग स्थापित हुआ जिसके चलते दोनों के बीच का फासला आधा हो गया तथा समुद्र मार्ग से व्यापार में नयी क्रांती आई. सुएज नहर के जरिए अपना सफर तय करनेवाले पहले ब्रिटिश व्यापारी जहाज 'ग्लासगो हेराल्ड' को इसी ऐतिहासिक ससुन गोदी में घाट पर लगाया गया था.

वर्ष 1875–80 में प्रिन्सेंस गोदी का निर्माण होने तक मुंबई शहर को समुद्र मार्ग से होने वाला व्यापार ससुन गोदी के जरिए ही होता था, जहाँ एक हजार टन के 5 जहाज घाट पर लगा करते थे. वर्ष 1880 में प्रिन्सेस गोदी को यातायात क लिए खुला करने के बाद मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने ससुन गोदी को मुंबई शहर को समर्पित किया जिसका उपयोग एक सुरक्षित मत्स्य बंदरगाह के रुप में शहर के 'कोली' समुदाय द्वारा किया जाने लगा. ससुन गोदी की एक सबसे बडी खासियत थी उसके प्रवेशद्वार के केंद्र में बाँधा गया एक घंटाघर, जिसके दोनों ओर चौकियाँ थी. मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने द्वार के ढाँचे का जीर्णोद्धार कर पुनः उसके मूल रूप की शान वापस दिला दी और कुल 25 लाख रुपये की लागत से उसमें स्थापित ऐतिहासिक घडी की भी मरम्मत कर उसमें नयी जान डाल दी. मूलतः स्थापित घडी को दुरुस्त करके उसको चालू स्थिति में लाने का कार्य पूरा करने के लिए मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने श्रीमान मोहम्मद दमानी की सेवाओं का सहारा लिया जो 68 वर्ष के पुराने घडीसाज थे और उनका परिवार इथिओपिया से यहाँ आया था तथा तीन पीढियों से इस शहर की सडकों तथा टावरों की घडियों की मरम्मत तथा रखरखाव के काम मे लगा हुआ है. इस ऐतिहासिक धरोहर का जीर्णोद्धार करने के पत्तन के प्रयासों को सफलता तब मिली जब 50 वर्षों से भी ज्यादा समय से बंद पडी इस घडी ने 31 दिसंबर 2014 की मध्यरात्रि को घंटा नाद किया.

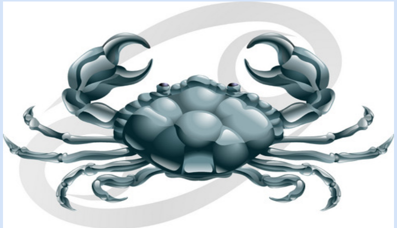

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने टाटा स्मारक अस्पताल की कैंसर के साथ लडाई में हाथ बँटाया.

मुंबई शहर के साथ अपने 141 वर्षों के प्रदीर्घ जुडाव को निभाते हुए तथा देश के विभिन्न भागों से उपचार हेतु दाखिल होने वाले कैंसर रोगियों की खस्ता हालत को सुधारने हेतु मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने टाटा स्मारक अस्पताल के अनुरोध पर तुरंत जवाबी कार्यवाही करते हुए कॉटन ग्रीन स्थित अपने प्रत्येकी 18.39 वर्ग मीटर के 120 आवासीय यूनिटों से बनी तीन बिल्डिंगों को कार्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत रु.101/– के नाममात्र शुल्क पर टाटा स्मारक अस्पताल को आबंटित करने का निर्णय लिया है. टाटा स्मारक अस्पताल में उपचार के लिए आनेवाले रोगियों तथा उनकी देखभाल करनेवाले उनके रिश्तेदारों को रहने के लिए निशुल्क इस्तेमाल करने योग्य बनाने एवं इन यूनिटों का रखरखाव करने की जिम्मेदारी टाटा स्मारक अस्पताल की होगी.

रोगियों को इन यूनिटों का संक्रमित आबंटन करने की प्रक्रिया को टाटा स्मारक अस्पताल द्वारा नियंत्रित किया जायेगा और उनको इन में से कुछ यूनिटों को उनके निवासी डॉक्टरों को आबंटित करने की अनुमति भी दी जायेगी. मुंबई पोर्ट ट्रस्ट के इस परोपकारी कार्य के कारण देश के एक अग्रणी कैंसर केंद्र, टाटा स्मारक अस्पताल की सुविधाओं में सुधार आयेगा और दूर दराज से कैंसर के उपचार हेतु आनेवाले सैकडों रोगियों को राहत प्राप्त होगी.

नौभार संभलाई में मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने रचा नया कीर्तिमान

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने अपने 141 वर्षों के लंबे इतिहास में वित्तीय वर्ष 2014–15 में अब तक की सर्वाधिक नौभार मात्रा 61.61 दशलक्ष टन की संभलाई कर नया कीर्तिमान रचा. पोर्ट द्वारा पिछले वर्ष संभाला गया अब तक का सर्वाधिक नौभार 59.18 दशलक्ष टन था जिसमें इस वर्ष लगभग 4.11 प्रतिशत अधिक संभलाई दर्ज की. पोर्ट रेल द्वारा रेल से संबंधित नौभार संभलाई में 3.5 प्रतिशत की वृद्धि इस उत्कृष्ट निष्पादन की एक प्रमुख विषेशता है. नौभार संभलाई के इस कीर्तिमान के साथ ही पोर्ट ने देश के बड़े महा पत्तन न्यासों में से एक होने का गौरव बरकरार रखा है. श्री रवि एम परमार, अध्यक्ष, मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने कहा कि विभिन्न नौवहन तथा अन्य प्रचालनात्मक अवरोधों के बावजूद यह ए क असाधारण उपलब्धि है. पोर्ट के समस्त निष्पादन की प्रशंसा करते हुए, श्री परमार ने सभी साझेदारों (स्टेकहोल्डरों) को बधाई दी तथा इस प्रभावशाली कीर्तिमान स्थापित करने वाले मुंबई पोर्ट ट्रस्ट के कर्मचारियों के योगदान की सराहना की.

सीमेंट टर्मिनल निर्माण हेतु मुंबई पोर्ट ट्रस्ट कृतसंकल्प

मुंबई शहर में उसकी विकासशील आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष लगभग 1.25 दशलक्ष टन सीमेंट की खपत होती है. वर्तमान में यह सीमेंट पडोसी राज्यों से सड़क/रेल से आता है. जिससे प्रतिदिन लगभग 350 ट्रकों के आवागमन की आवश्यकता होती है. इससे अत्यधिक व्यस्त शहर की सडकों पर भीड–भाड बढ जाती है एवं शहर की सड़कों पर भीड–भाड कम करने के लिए, शहर की सीमेंट की आवश्यकताओं को प्रभावित किये बिना मुंबई पोर्ट ने मंडल की दिनांक 27.3.2015 को आयोजित बैठक में पेट्रोलियम गोडाउन स्थित जमीन का 2.5 हेक्टेअर्स जमीन **'जैसे है जहाँ है आधार पर'** 30 वर्षों के लिए मेसर्स अल्ट्राटेक सीमेंट लि. को पट्टे पर देने का संकल्प किया है. यह जमीन पूर्ण–स्वचालित सीमेंट सम्हलाई टर्मिनल के निर्माण के लिए उपयोग की जायेगी ताकि खुले सीमेंट की सम्हलाई और ढुलाई के परिणाम स्वरुप होने वाले वायु प्रदूषण से बचा जा सके. 18 महीने में जब यह टर्मिनल तैयार होगा, तो तटीय मार्ग से शहर की खपत के लिए अपेक्षित सीमेंट की आवाजाही को बढावा मिलेगा. पोर्टेबल अनलोडर्स सहित विधिवत सज्जित, 30,000 टन की क्षमता वाला खत्ता (साईलोज), बोरी भरने का संयंत्र और अन्य सहायक सुविधाओं से पूर्ण इस सुविधा के विकास के लिए अनुमानित लागत 100 करोड रुपया है.

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट द्वारा गाड़ियों के निर्यात में विक्रम

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट ने पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2014–15 में गाड़ियों के निर्यात में 37 प्रतिशत की प्रभावकारी वृध्दि प्राप्त की है. वर्ष 2013–14 में निर्यात की गयी 98,547 गाड़ियों की तुलना में इस वर्ष 1,35,320 गाड़ियाँ निर्यात की गईं. इसमें कार, ट्रक्स, आग बुझानेवाली गाड़ियाँ, मिट्टी वहन करनेवाली गाड़ियाँ, अँम्बुलन्स, बसेस इत्यादि वाहनों का समावेश है. मुंबई पोर्ट ट्रस्ट का यह पहला अवसर है जब उसने एक वर्ष में 1,00,000 से ज्यादा गाड़ियों को निर्यात किया.

महाराष्ट्र राज्य में मुंबई पोर्ट ट्रस्ट एकमात्र बहुउद्देशीय बंदरगाह है, जो गाड़ियों का उद्योग करनेवाले पुणे और नासिक स्थित कारखानों के उत्पादनों को ऑस्ट्रेलिया, अमरीका, मध्य पूर्व और पूर्व देशों में निर्यात करने में मददगार है. फोल्सवॅगन, मारूति सुझुकी, टाटा मोटर्स, महिंद्रा ऍण्ड़ महिंद्रा, अशोक लेलंड़ ये मुंबई पोर्ट ट्रस्ट के प्रमुख ग्राहकों में से हैं जो अपने उत्पादन निर्यात करते हैं.

A SMILE GOES A MILE

When a patient visits a hospital how often is he greeted with a smile? Some may say 'rarely'. A smile is a small contraction of the facial muscles and costs nothing. Yet it can be the hardest thing to find in a hospital. Yes, we as medical personnel do smile at a patient we know personally but what about the countless ones who attend the hospital daily? Sometimes we forget that a small greeting or a pleasant smile goes a long way in making a patient feel better. Half the problem is already gone if the doctor- patient communication is positive. Every patient needs to be heard more than anything and in the usual hospital 'rush' we are often too busy to "hear".

It is a sad reflection of the state of things that patients are surprised by the sight of a smiling, polite medical professional, be it a doctor, a nurse or an attendant. What should be the norm is now the exception! Yes, there is a huge workload, yes, there is little time. Yes, there is the monotony sometimes. But despite all this, maybe we can remember to smile at a patient. So instead of encountering an army of grim attendants, nurses, doctors and technicians with regrettably a 'know all' attitude, the patient may be helped along by smiling faces and a 'sympathetic' hospital.

What we medical professional need to remember is that neither do we know everything and neither are we doing the patient a favour. We are here in a symbiotic relationship and one begets the other. It takes a huge leap of faith for a patient to trust the doctor with his or her life. As a young graduate I often wondered how the patient could ever take whatever opinion I happened to trot out to him or her, considering how we as doctors tend to 'doctor shop' ourselves. So we need to treasure that trust and then maybe we can also find the time to be pleasant to our patients.

A smile truly goes a mile...... and even more so in a hospital like our where there are no corporate concerns and the patient is simply that ......"a patient" and not "a clint".

(Dr. Inita R, Matta)

Sr. Dy. C.M.O.

MUMBAI PORT TRUST LEND HELPING HAND IN IMPROVING HEALTH STATUS OF CHILDREN IN MCGM SCHOOLS

Mumbai Port Trust, a premier port serving country's EXIM trade in general and the hinterland of Mumbai in particular, has lent a helping hand with financial support to Global Health Strategies, a not for profit company, in executing a 'Comprehensive School Health Project' to improve health status of children studying in 127 MCGM Schools in 'M-East' and 'M-West' Wards.

The project is targeting 60,000 children in the primary schools of MCGM in these Wards. Mumbai Port Trust has contributed Rs.50 lacs towards this ambitious project from its CSR corups. The funds given by the Port Trust are being utilized for creating software to capture and monitor data on more than hundred parameters concerning nutrition and health status of children in the MCGM schools, content development for virtual class rooms to improve nutrition education and, to prevent substance abuse amongst school children.

The project also envisages community outreach programs for training the nodal teachers and organizing workshops for medical officers of MCGM. Working closely with the Global Health Strategies, MCGM has been closely monitoring the project execution with financial support from Mumbai Port Trust.

स्वच्छता अभियाना अंतर्गत प्रत्यक्ष सहभागी होताना वरीष्ठ उप मुख्य वैद्यकीय अधिकारी डॉ. सुजाता मोकल व अन्य.

"स्वच्छ भारत – एक स्वप्न मोदीजींचे"

महात्मा गांधी जयंतीचे औचित्य साधून गेल्या वर्षी 2 ऑक्टोबर 2014 ला माननीय पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी स्वच्छ भारत अभियानाचा नारा दिला. त्याला प्रतिसाद देत मुंबई बंदरातील सर्व विभागात सुरु असलेल्या स्वच्छता अभियाना अंतर्गत, वैद्यकीय अधिकारी (प्रशा.) डॉ. सुजाता मोकल यांनी या अभियानाचा मांडलेला लेखा जोखा.

महात्मा गांधीजींचे ठाम मत होते की स्वातंत्र्या पेक्षा स्वच्छता / सॅनीटशन महत्वाचे. सॅनीटेशनच्या अभावी झालेली खेडेगावांतील वाईट परिस्थिती त्यांनी पाहिली होती व स्वतः अनुभवली होती. त्यामुळे स्वच्छता व सॅनीटेशन हा स्वस्थ जीवनाचा मुलभुत पाया आहे असे पटविण्याचा त्यांचा नेहमीच आग्रही प्रयत्न असे. त्या काळात गांधीजींनी स्वतः हातात झाडू घेऊन स्वच्छता मोहीम राबविली परंतु जनजागृतिच्या अभावी ती पुर्णत्वाला जाऊ शकली नाही. आज भारताला स्वातंत्र्य मिळुन 67 वर्षानंतर ही आपल्या देशात खेडेगावांत फक्त 30% सॅनीटेशनचीच सोय आहे.

महात्माजींचे अपूर्ण स्वप्न पुर्ण करण्याचा विडा आपले पंतप्रधान माननीय श्री. नरेंद्र मोदीजींनी उचलला आणि 15 ऑगस्ट 2014 च्या आपल्या भाषणात त्यांनी घोषणा केली की 2 ऑक्टोबर 2019 पर्यंत शहरी व ग्रामीण भारतात पुरेशी शौचालये बांधून स्वच्छतेची सोय घरोघरी आणि सार्वजनिक ठिकाणी केली जाईल. भूपृष्ठ परिवहन व नौकानयन मंत्री माननीय नितीन गडकरी यांनी घन आणि द्रव कच-याचे नियोजन आणि विल्हेवाट शास्त्रोक्त पध्दतीने लावण्याची सोय गावांगावांत पुरविण्याची घोषणा केली.

फक्त शासनानेच सोयी सुविधा पुरवून स्वच्छता होत नाही तर ती व्यक्तिगत पातळीवर आणि प्रत्येक द्वारातून केली गेली पाहीजे. "माझे घर आणि माझा परिसर" स्वच्छ ठेवण्याचा प्रत्येकाने चंग बांधला पाहिजे. सोयी सुविधा पुरवून देखील ती वापरण्याची मानसिकता खेडयांतून तसेच काही ठिकाणी शहरांतून ही आढळत नाही. त्याला तसेच कारणही आहे. कित्येक ठिकाणी असे दृष्य दिसते की शौचालयाची सोय असूनही त्यात पाण्याची अपुरी सोय असल्या कारणाने ती अस्वच्छ असताता व लोक उघडयावर शौचास बसणे पसंद करतात.

स्वच्छता ठेवणे व कचरा उचलणे ही केवळ सफाई कामगारांची जबाबदारी नसून ती 125 करोड भारतीयांचीही जबाबदारी आहे. ती आपल्या सर्वांची सामाजिक जबाबदारी आहे आणि ही गोष्ट जेव्हां आपल्या 125 करोड भारतीयांच्या लक्षात येईल तेव्हांच आपली स्वच्छ भारत ची मोहीम यशस्वी होईल. ही मोहीम प्रत्येक सामान्य नागरिकांच्या सर्वांगीण विकासा साठी राबविली जात आहे. खरकटे पाणी व कचरा उघडयावर आणि रस्तावर टाकला जातो. सफाई कामगार तो दुस-या दिवशी उचलून नेईल याचा त्यांना पूर्ण विश्वास असतो. पण तसे झाले नाही तर त्या साठलेल्या कुजलेल्या कच-यामुळे आपल्या परिसरात व घरात रोगराईचा प्रादुर्भाव होईल हे माहित असूनही त्याबद्दल डोळझाक केली जाते. कारण वर्षानुवर्ष जडलेल्या वाईट सवयी जायला ही काही वेळ तर जाईलच. म्हणूनच जन जागृती ची आपल्याकडे अत्यंत गरज आहे.

स्वच्छ भारत मोहीम सोबत जन जागृती द्वारे लोकांना हे समजावून दयावे लागेल की त्यांच्या अस्वच्छ सवयींमुळे व वाटेल तिथे थुंकण्यामुळे त्यांच्या शारीरिक, मानसिक, वैचारिक व आर्थिक विकासात कसे अडथळे येतील. या संदर्भात मेडिकल डिपार्टमेन्टने आणि वेलफेअर डिपार्टमेन्टने स्वच्छता मोहिम आणि श्रमदानाचा कार्यक्रम आपल्या बी.पी.टी. कॉलनीमध्ये आयोजित केला. शाळकरी मुलांची पदयात्रा car rally, यात स्वच्छता, आणि मलेरिया, डेंग्यू या आजारांपासून बचाव करण्याची माहिती पुरविली गेली. हल्लीच जूनी कॉलनी बिल्डिंग क्रमांक 24 आणि 25 मधील रहिवाश्यांसाठी स्वच्छता आणि आरोग्य विषयक जनजागृती कार्यक्रम आपल्या हेल्थ इज्युकेटर श्रीमती एलीस यांच्या मार्गदर्शनाखाली पार पडला आणि त्याला कॉलनीतील रहिवाश्यांचा उस्फुर्त प्रतिसाद मिळाला. इतर स्वच्छतेच्या प्रश्नांबाबत देखील प्रयत्न चालू आहेत.

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट मध्ये स्वच्छता आभियानां अंतर्गत सर्व विभागां मधील निरूपयोगी व जुने भंगार सामानाची विल्हेवाट लावण्यात आली. हॉस्पीटल मध्ये ठिकठिकाणी कचरा पेटया बसविण्यात आल्या त्यात देखील आम्हांला समाधानकारक प्रतिसाद मिळत आहे, त्यामुळे स्वच्छता मोहीम ही एक वेळ करून सोडून न देता ती सातत्याने करत राहीले तर नक्कीच ती यशस्वी होण्यात काहीच अडथळा येउ नये. जनजागृतिचाच एक भाग म्हणून मेडीकल डिपार्टमेन्ट ने आपल्या भगिनींद्वारे एक पथनाटया चे आयोजन केले आहे. आमच्या या प्रयत्नांमुळे लोकांच्या मानसिकतेत बदल झाला व त्यांच्या अस्वच्छ सवयींमध्ये परिवर्तन झाले तर श्री. मोदींची मोहीम सफलतेकडे नेणारे हे एक पुढचे पाऊल असेल यात वादच नाही, आणि महात्मा गांधीजींना वाहिलेली ही श्रध्दांजली ठरेल !

डॉ. सुजाता मोकल
वरिष्ठ उप मु.वै.अ. (प्रशासन)

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट में हिन्दी सप्ताह धूमधाम से मनाया गया

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट में 14 सितंबर से 19 सितंबर 2015 तक विजयदीप सम्मेलन कक्ष में हिन्दी सप्ताह श्री. यशोधन वनगे (भारासे), उपाध्यक्ष, मुंपोट्र तथा श्री. रा.पां. पैबीर, सचिव एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी की उपस्थिति में धूमधामसे मनाया गया. इस उपलक्ष्य में गायन और कई रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया. इस सप्ताह के दौरान कहानी लेखन, निबंध प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता और वक्तृत्व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए.

श्री. यशोधन वनगे उपाध्यक्षजीने अपने अध्यक्षीय भाषण में सरकारी कार्यालयों में दिन – प्रतिदिन के कार्यो में हिन्दी कामकाज की आवश्यकतापर बल दिया, उन्होंने चीन का उदाहरण देते हुए बताया कि बड़ी संख्या और बड़ा क्षेत्र होने के बावजूद भी वहाँ जनता में चायनीज भाषा का ही उपयोग किया जाता है. सचिव एवं मुख्य रा.भा.अ. श्री. पैबीरजी नें पोत परिवहन मंत्रीजी श्री. नितीन गडकरीजी का संदेश पढकर सुनाया. श्री. गिरीराज सिंह राठोड, उप सचिव ने लघुकथाओं के माध्यम से सभी लोगोंको हसने के लिए मजबूर कर दिया. श्री. पी.पी. फणसेकर, यातायात प्रबंधक (प्रभारी) ने माननीय गृहमंत्री श्री. राजनाथ सिंह के संदेश को पढकर सुनाया. श्री. व्ही. व्ही. एस. व्ही. राव, वरिष्ठ उप निदेशक (प्रणाली) ने आभार प्रदर्षण किया.

इस सप्ताह का मुख्य आकर्षण था सुप्रसिध्द व्यंग्यकार माननीय हरिशंकर परसाईजी की रचनाओंपर आधारित हास्य व्यंग्य नाटिका "मै नर्क से बोल रहा हूं" का मंचन. उपस्थितों ने नाटिका का बडा लुफ्त उठाया. कार्यक्रम में अपने गायन से चार चांद लगाये गायक श्री. दत्तात्रय जोशी, श्रीमती निवेदिता मेकडे, श्री. सुरेश संतनम, श्रीमती समृध्दि मांडेवाल और वाद्य यंत्रोंपर साथ दिया सर्वश्री विलास शार्दुल और रवि सोनावणे ने. कार्यक्रम का सूत्रसंचालन श्री. ला.रा. राम, हिन्दी अधिकारी ने किया.

स्वच्छ भारत अभियान का आयोजन

महात्मा गांधीजी की 146 वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्तूबर 2015 को वडाला में नाडकर्णी पार्क स्थित कर्मचारी वसाहत परिसर में स्वच्छ भारत अभियान की शुरुवात की गयी, इस अवसर पर स्वच्छता के बारे में जनजागृति हेतु पथनाट्य एवं रॅली का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में मुंपोट्र के सचिव श्री. रा.पां.पैबीर, वरिष्ठ उप सचिव श्री. गंगाधर ब्रह्मा, वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.(श्रीमती) सुजाता मोकल, वरिष्ठ कल्याण अधिकारी श्री. रुफी कुरेशी एवं बडी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित थे. अपने अध्यक्षीय भाषण में मुंपोट्र के सचिव श्री. रा.पां.पैबीर, नें स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया, तथा कर्मचारियों ने स्वच्छता के बारे में शपथ ग्रहण की.

बी.पी.एक्स. मुंबई इन्टरनॅशनल कुझ टर्मिनल

इंदीरा गोदी (हमालेज)

वर्ष 2014 - 2015 का कुल कारोबार

निष्पादन विशेषताएँ

	2013-14	2014-15
कुल सम्हलाई किये गये जहाज	4611	4582
सम्हलाई किये माल जहाज (स्ट्रीम छोडकर)	1358	2018
माल सम्हलाई (दशलक्ष टन)	59.18	61.66
कंटेनर यातायात (लक्ष टीईयुज)	0.41	0.45
औसत बर्थिंग पूर्व अवरोधन (दिन)	0.51	0.03
औसत टर्न राऊंड टाईम (दिन)	2.88	2.99
औसत प्रति जहाजी दिन उत्पादन (टन)	9415	7619

व्यापार विशेषताएँ :

वर्ष 2014 -15 के दौरान मुंबई पोर्ट ट्रस्ट के व्यापार की मुख्य विशेषताएँ है :

62.47% पीओएल एवं द्रवरुप माल, 15.55% स्ट्रीम ट्रान्सशिप माल और 21.90% ब्रेक बल्क एवं अन्य ड्राय बल्क माल शामिल है. व्यापार में शामिल मुख्य पदार्थ और उनके प्रतिशत नीचे चार्ट में दिये गये है.

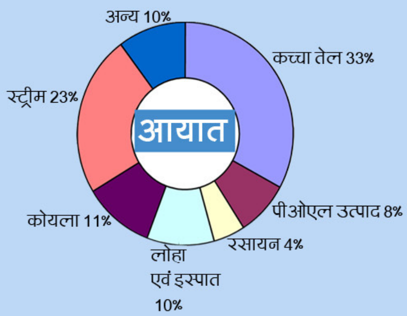

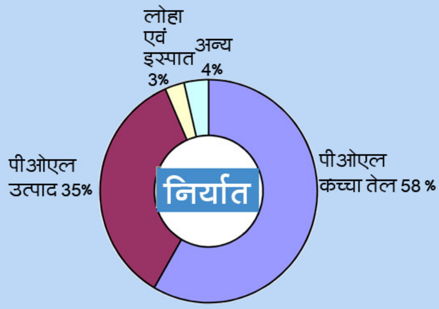

मुख्य व्यापार साझेदार

विश्व के लगभग सभी देश मुंबई पोर्ट के व्यापारीक संबधी साझेदार है. वर्ष 2013-14 के दौरान क्षेत्रवार व्यापार की मात्रा नीचे दी गयी है.